(वर कन्या का चयन)

{1} जन्मकुण्डली में वर के सप्तम स्थान का स्वामी जिस राशि में हो, यदि वह राशि कन्या की भी हो तो विवाह उत्तम होता है।

{2} यदि कन्या की राशि, वर के सप्तमेश का उच्च स्थान हो तो विवाह अच्छा होता है।

{3} वर के सप्तमेश का नीच स्थान यदि कन्या की राशि हो तो भी अच्छा होता है।

{4} वर का शुक्र जिस राशि में हो वही राशि यदि कन्या की हो तो वह भी अच्छा होता है।

{5} वर की सप्तमस्थ राशि यदि कन्या की राशि हो तो वह विवाह अच्छा होता है।

{6} वर का लग्नेश जिस राशि में हो वही राशि यदि कन्या की भी हो तो विवाह सुखदायी होता है।

{7} वर के चन्द्र-लग्न से सप्तमस्थान में जो राशि पड़े वही राशि यदि कन्या का जन्म-लग्न हो तो विवाह बहुत शुभ है।

{8} वर की चन्द्रराशि से सप्तम स्थान पर जिन जिनकी ग्रहों की दृष्टि हो, वे ग्रह जिन जिनकी राशियों में बैठें हो उन राशियों में से किसी राशि में यदि कन्या का जन्म हो तो वह विवाह भी उत्तम होता है। उपर्युक्त दो नियमों का विचार कन्या की कुण्डली से भी होता है।

{ गुण मेलापक में विचारणीय }

सबसे पहले कुण्डली सामने आते ही जन्म नक्षत्रों के आधार पर उनका गुण-मिलान देखने लगना ठीक नहीं है। सब गुण मिलने पर भी अल्पायु या अशुभ योग आ जाएगा तो मिलान निरस्त हो जाता है। अत: सर्वप्रथम आयु विचार करें। इसके बाद लड़के की कुण्डली में भाग्य, रोजगार, पत्नी-सुख का विशेष करें। इसके बाद लड़के की कुण्डली में भाग्य, रोजगार, पत्नी-सुख का विशेष विचार जातकोक्त नियमों से करें तथा इसी प्रकार लड़की की कुण्डली मे देखें। विशेषतया पति-नाशक व पत्नी-नाशक योगों का विचार करें।

मांगलिक योग विचार तथा स्त्री-जातकविचार में बिताए गए नियमों की रोशनी में सब बातों का विचार करना चाहिए। विशेषतया लग्न, सप्तम, पंचम, अष्टम व नवम का विचार करें। इनमें पापग्रह ठीक नही होते।

इनमें भी 1,7,8 में पाप ग्रह सर्वथा निषिद्ध हैं। अष्टम में पाप प्रभाव वैधव्य कारक, सप्तम में पाप प्रभाव सौभाग्य में कमी, पंचम नवम में पाप प्रभाव सन्तति व भाग्य में कमी तथा लग्न में पाप प्रभाव लड़की के स्वास्थ्य में कमी लाता है। इस प्रकार विचार करने के बाद गुण मिलान करें।

{ मिलान का आधार }

वर व कन्या दोनों का जन्म नाम लेकर मिलान करना चाहिए। एक का जन्म नाम व दूसरे

का प्रसिद्ध नाम लेकर कभी भी मिलान नहीं करना चाहिए। यह महान दोषकारक होता है।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।

व्यत्येन यदा योज्यं दम्पत्योनिर्धनप्रदम्।

अत: जन्म नाम प्रधान है, यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए।

अज्ञातजन्मनां नृणां नामभे परिकल्पना।

तेनैव चिन्तयेत सर्वराशिकूटादिजनमवत्॥

{ अष्टकूट विचार }

वर-कन्या के चुनाव के विषय में अब तक बहुत कुछ लिखा गया है और भी आगे उपयोगी बातों की चर्चा होगी। इस स्थान में कुण्डली-मिलाप अर्थात कुण्डली-गुण मेलापक के विषय में कुछ लिखा जाता है।

पूर्वजों ने दिव्य दृष्टि से विवाह के विषय में (जो एक धार्मिक कर्तव्य है) बड़ी छान-बीन की है। एक कन्या किसी दूसरे वर के साथ सर्वदा के लिये गृहिणी बनने को जाती है। इन दोनों के शारीरिक एवं मानसिक विभिन्नताओं पर आजन्म के लिये उन लोगों का सुख-दु:ख निर्भर करता है

इस शारीरिक एवं मानसिक गुण-दोषों को और इसके तारतम्य को जानने के लिए 'वर्ण', 'योनि', 'गण', 'नाड़ी', 'तारा', 'ग्रहमैत्री' और भकूट आदि अष्टकूट का संकेत किया है।

वर्ण--- मनुष्य के जन्म नक्षत्र के अनुसार महर्षियों ने इस बात के जानने की विधि बतलाया है कि कौन जीव जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र है। यदि वर-कन्या का एक वर्ण हो तो उसे अच्छा माना है।

वश्य--- साधारण भाषा में वश्य का अर्थ है कि एक व्यक्ति पर दूसरे का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि दूसरा उसके साथ जो चाहे कर सके या उससे जो चाहे करा सके। ऋषियोने राशि के अनुसार पांच 5 विभाग में बांटा है।

चतुष्पद, मानव, जलचर, बनचर और कीट वश्य कहते है। वर-कन्या के इसी वश्य-विभाग के अनुसार उन का बल बतलाया है। जैसे दोनों चतुष्पद हों, दोनों मानव हों अर्थात दोनों एक वश्य के हो तो दो बल आता है। मानव-चतुष्पद हो तो एक बल, इत्यादि, इत्यादि।

योनि--- नक्षत्रों को चौदह योनियों में बांटा है। अश्व, गज, मेष, सर्प, श्वान, मर्जार, मूषक, गौ, महिष, व्याघ्र, मृग, बानर, नकुल(नेवला) और सिंह। साधारण व्यवहार से देखने में आता है कि घोड़ा और महिष में, हरिण और हाथी में, बकरा और बानर में, नकुल और सर्प में, सिंह और कुत्ते में, मार्जर और मूषक में, व्याघ्र और गौ में वैर रहता है।

(वर कन्या का चयन)

अतएव महर्षियों का सिद्धान्त है कि एक योनि से अत्यन्त उत्तम और वैर योनी से अत्यन्त निकृष्ट और अन्य योनियों में साधारण फल होते हैं।

गण--- यह सभी जानते है कि देवता, मनुष्य और राक्षस यही तीन गण माने गये हैं। यह भी प्रसिद्ध बात है कि अपने अपने गण में पूर्ण प्रीति होती हैं।

देव मनुष्य में समता, देव-राक्षस में वैर और मनुष्य-राक्षस में मृत्यु होती है। ऋषियों ने नक्षत्रों के भेद से इन तीन गणों को माना है और वर-कन्या के सम्बन्ध को इसी गण-भेद से शुभ और अशुभ बतलाया है।

नाड़ी--- नाड़ी शब्द का प्रयोग योग शास्त्र एवं वैद्यक शास्त्र में प्राय: पाया जाता है। इस शब्द का भाव यही है कि वह शारीरिक नली, नश इत्यादि जो रुधिर प्रवाह होते होते स्वच्छ हो जाता है और इसी प्रवाह के गणनानुसार वैद्यक शास्त्रों में स्वास्थ्य का अनुमान होता है अर्थात नाड़ी से मनुष्य की शारीरिक अवस्था का पता चलता है।

ऋषियों ने ज्योतिष-शास्त्र के लिये जन्म-नक्षत्र-भेदानुसार तीन नाड़ियां मानी हैं। अश्विनी से आरम्भ करके आदि, मध्य, अन्त; अन्त, मध्य, आदि पुन: आदि, मध्य और अन्त। इसी क्रम से सताइसों नक्षत्रों के नाड़ी होते हैं। वर और कन्या का एक नाड़ी होने से विवाह शुभ नहीं माना गया है।

विद्युत विज्ञान का मत है कि शक्तियां समान प्रकार की हों तो वे एक-दूसरे को आकर्षित नहीं करके बल्कि विरोध करती हैं। अनुमान होता है कि कुछ ऐसे ही विचार से ऋषियों ने बतलाया है कि भिन्न-भिन्न नाड़ी यदि वर-कन्या के हों तो फल शुभ होता है अन्यथा अशुभ्।

तारा--- वर-कन्या का किसी न किसी नक्षत्र में जन्म होता है। नक्षत्र, तारा समुदाय का नाम है। इस कारण वर के नक्षत्र से कन्या नक्षत्र तक गिना जाय और उस को नौ से भाग दे। यदि शेष 3,5,7 हो तो अशुभ होता है, अन्यथा शुभ।

यदि नौ से भाग न पड़ सके तो उसी संख्या से शुभ अशुभ का विचार होता है। इसी प्रकार कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिनकर भी देखना चाहिए।

भकूट--- वर-कन्या की जन्म राशियों की आपस की स्थिति के अनुसार इसे माना गया है अर्थात वर-कन्या का परस्पर छठां, आठवां, नवां, पांचवां या दूसरा, बारहवां हो तो शुभ नहीं होता। पर तृतीय-एकादश, चतुर्थ-दशम, सप्तम-सप्तम या एकही हो तो शुभ नहीं होता। पर तृतीया-एकादश, चतुर्थ-दशम या सप्तम-सप्तम या एकही हो तो उत्तम माना है।

ग्रहमैत्री--- नैसर्गिक मैत्री चक्र को देखने से मालूम होगा कि ग्रहों में मित्रता आदि का भेद किस प्रकार होता है। वर-कन्या के राशीश की मित्रता आदि के अनुसार फल होता है।

(वर कन्या का चयन)

(वर कन्या का चयन)